‘‘राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्यावयसायिक शिक्षा से अपेक्षाएँ – एक अध्ययन’’

(जयपुर शहर के विशेष सन्दर्भ में)

शिक्षाशास्त्र में पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध रूपरेखा

शोध निर्देशिका | शोधार्थी

डॉं. मंजू चौधरी | ममता गोस्वामी

शिक्षा एवं प्रविधि विभाग

शिक्षा एवं प्रविधि संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

जनवरी–2019

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ममता गोस्वामी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं में व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाए–एक अध्ययन'' (जयपुर शहर के विशेष सन्दर्भ में) मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया जायेगा। इस शोध प्रबन्ध की सामग्री मौलिक, शोधपरक एवं स्तरीय होगी जो ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर की पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) की उपाधि हेतु परीक्षणार्थ नियमों पर खरा उतरेगी।

दिनांक

डॉ. मंजू चौधरी

प्रमाण–पत्र

मैं, ममता गोस्वामी (शिक्षाशास्त्र) शपथपूर्वक घोषणा करती हूँ, कि ''राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाएँ–एक अध्ययन'' (जयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में) शीर्षकयुक्त शोध प्रबन्ध मेरे द्वारा स्वयं लिखा जा रहा है। इस शोध प्रबन्ध की सामग्री मौलिक, शोधपरक एवं स्तरीय होगी जो ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर की पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) की उपाधि हेंतु परीक्षणार्थ नियमों पर खरा उतरेगी।

दिनांक   शोधार्थी

ममता गोस्वामी

1. पृष्ठभूमि (प्रस्तावना) :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की क्रियान्विती में शिक्षा को श्रम से जोड़ने तथा व्यावसायिक क्षेत्र आवश्यक मानवीय शक्ति को उपलब्ध कराने तथा शिक्षार्थी को स्वावलम्बी तथा अथोपार्जक बनाने के उद्देश्य से देश के सभी राज्यों में सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ व्यावसायिक शिक्षा को भी शिक्षा में अंगीकार किया गया। राज्य में भी केन्द्र प्रवर्तित योजना व्यावसायिक शिक्षा को +2 स्तर पर लागू किया गया। राज्य में सत्र 1987–88 में शिक्षा प्रारम्भ को गई। वर्तमान में 155 विद्यालयों में 44 पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। राज्य में दसवीं उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को कक्षा ग्यारहवीं से व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम का चयन करना पड़ता है।

डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा आयोग (1946–48) ने भी व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थी के विकास का अभिन्न अंग बताया। आयोग ने कहा – ''व्यावसायिक शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो पुरूषों और स्त्रियों को व्यावसायिक भावना के साथ–साथ परिश्रमपूर्ण एवं उत्तरदायी सेवा के लिए तैयार करती है।'' आयोग की मान्यता थी कि व्यावसायिक शिक्षा महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करती है। हमारी संकटपूर्ण सभ्यता उसी दशा में जीवित रह सकती है जब व्यावसायिक मनुष्य अपनी नैतिक शक्तियों एवं मानसिक योग्यताओं का

आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग करें। व्यावसायिक शिक्षा का आधार केवल व्यावसायिक दक्षता ही नहीं होना चाहिए बल्कि इसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों तथा सम्बन्धों को समझने की क्षमता और बिना द्वेष के यथार्थता को देखने की क्षमता का भी पाया जाना आवश्यक है। आयोग ने कृषि, वाणिज्य, शिक्षण व्यवसाय, इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी, कानून शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा आदि को व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सम्मिलिजत करने का विचार दिया है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग मुदालियर कमीशन (1952–53) ने भी व्यावसायिक शिक्षा का अभिन्न अंग माना है जिसका उद्देश्य है बालकों की व्यावसायिक कुशलताओं में वृद्धि करना जिससे वे जीवन में व्यवसाय चयन की समस्या से छुटकारा पा सकें।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी शिक्षा के व्यावसायीकरण पर जोर दिया इसमें बताया गया कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम या समस्याओं की स्थापना करने का उत्तरदायित्व सरकार एवं सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्रों में नियोक्ताओं पर होगा। नवसाक्षरों प्राथमिक शिक्षा प्राप्त युवकों, स्कूल छोड़ देने वालों कार्यरत व्यक्तियों तथा बेरोजगारों एवं अर्द्ध

बेरोजगारों व्यक्तियों को व्यावसायिक शिक्षा के अनौपचारिक गत्यात्मक तथा आवश्यकताओं पर आधारित कार्यक्रम भी उपलब्ध करवाये जायेंग।

कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (सैडलर कमीशन 1917–1919) ने भी व्यावसायिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने हेतु दो सुझाव दिये :–

- विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाए।
- इण्टर कक्षाओं के पाठ्यक्रम को आवश्यकतानुसार व्यावसायिक आधार दिया जाए।

2. अध्ययन की सार्थकता या आवश्यकता :–

वर्तमान में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। जनसंख्या की असाधारण तीव्र वृद्धि से जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं हेतु संघर्ष उत्पन्न होता है और इसी समस्या से उत्पन्न हुई युवा वर्ग की सर्वाधिक शोचनीय त्रासदी 'शिक्षित बेरोजगारी'। इस समस्या की उत्पत्ति में जनसंख्या वृद्धि एक कारण है वहीं हमारी शिक्षा नीति भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही हे। हमारी शिक्षा नीति के अनुसार साक्षरों में तो वृद्धि हुई किन्तु साथ ही शिक्षित बेरोजगारी की दर में भी वृद्धि हुई है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए इस स्तर पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई। अनुसंधानकर्त्री ने यह जानने का प्रयास किया कि उच्च मा. स्तर पर छात्र व छात्राओं में

व्यावसायिक शिक्षा के विषय में उनके विचारों में कोई अन्तर है। व्यावसायिक शिक्षा को लेकर कोई अन्तर है? इन सब प्रश्नों का उत्तर पान के लिए अनुसंधानकर्त्री ने इस समस्या ''राजस्थान राज्य के उच्च मा. स्तर के छात्र व छात्राओं में व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाएँ–एक अध्ययन'' (जयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में) में चुना गया।

3. समस्या कथन या विषय एवं अध्ययन क्षेत्र :–

''राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं में व्यावासायिक शिक्षा से अपेक्षाएँ – एक अध्ययन'' (जयपुर शहर के विशेष सन्दर्भ में)

4. शोध अध्ययन में प्रयुक्त विशेष शब्दों का अर्थ :–

समस्या को स्पष्ट रूप से समझने के लिए शोध समस्या में प्रयुक्त किए गए शब्दों को परिभाषित करना आवश्यक है –

व्यावसायिक शिक्षा :–

व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत उन सभी प्रकार की शिक्षा को सम्मिलित किया जाता है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

व्यावसायिक उच्च विद्यालय :–

ऐसा उच्च विद्यालय जिसमें धंधों और पेशें का पूर्व अथवा अर्द्ध कौषल का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें धंधों सम्बन्धी विषयों की अतिरिक्त कुछ सामान्य ज्ञान देने की व्याख्या भी रहती है।

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

(1) विद्यार्थियों के एक बड़े भोग को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की ओर अग्रसर करने का अध्ययन करना।

(2) विश्वविद्यालयों में सामान्य शिक्षा में प्रवेश हेतु विद्यार्थियों की निरउद्देश्यीय भाग दौड़ को कम करने का अध्ययन करना।

(3) विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर तथा रोजगार योग्य बनाने का अध्ययन करना।

(4) राजकीय व निती उ.मा. विद्यालयों की छात्र व छात्राओं का व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाओं का अध्ययन करना।

6. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए निम्न शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई है –

– जयपुर शहर के उ.मा.स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

– जयपुर शहर के उ.मा.स्तर के राजकीय व निजी विद्यालयों की छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा की अपेक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

– जयपुर शहर के उ.मा.स्तर के राजकीय व निजी विद्यालयों के छात्रों की व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

– जयपुर शहर के उ.मा.स्तर के राजकीय व निजी विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा से अपेक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

7. अध्ययन का परिसीमन :–

शोध समस्या की प्रकृति एवं क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है अतः समस्या के सभी बिन्दुओं पर अध्ययन कर पाना समय की दृष्टि से सम्भव नहीं है। इसलिए इस अध्ययन में दो क्षेत्रों को ही लिया गया है –

– लैंगिकता के परिप्रेक्ष्य में (छात्र व छात्रायें)

– विद्यालय स्तर के परिप्रेक्ष्य में (राजकीय व निजी विद्यालय)

* समस्या के अध्ययन को जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया जायेगा क्योंकि माध्यमिक शिक्षा

उत्तीर्ण होने पर ही व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम का चयन किया जाता है।

* यह अध्ययन लैंगिकता के आधार पर छात्र व छात्राओं तक ही सीमित किया जायेगा।

* सीमित समय व धन के कारण 200 न्यादर्शों पर ही परीक्षण किया जायेगा जिसमें 100 छात्र व छात्राएँ हैं।

* प्रस्तुत अध्ययन स्वनिर्मित प्रश्नावली आदि उपकरणों तक ही सीमित है।

8. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :—

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन हमारी सहायता करता है कि अन्य शोधकर्ताओं ने सम्बन्धित समस्या का क्या हल निकाला है और कौन से प्रश्न अभि अनुचरित रह गये हैं। यह शोधकर्ता की मदद इस विषय पर भी करता है कि वह पुनः उसी विषय की तथा सैंपल की पुनरावृत्ति ना करे। यह पूर्व कल्पनाओं के साथ महत्वपूर्ण सुझाव देने में भी सहायक होता है —

(i) प्रेसर (1988) :—

प्रेसर ने 1988 के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि के विषय में चयन कर अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला की 50 प्रतिशत से भी कम लोग

अपनी रूचियों के अनुसार अध्ययन कर पाते हैं। प्रारम्भिक किशोरावस्था के दिनों में व्यावसायिक रूचियाँ वास्तविकता से अत्यन्त दूर व परिवर्तनशील होती है।

(ii) रॉबर्ट एल. (1997) :–

इन्होंने आसाम में पोलिटेक्निक संस्थाओं में व्यावसायिक कुशलता की प्रभावशीलता का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि उच्च शैक्षणिक उपलब्धियाँ व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि का कारक है।

(iii) शर्मा, विनोद कुमार (2012) :–

ने गैर सरकारी व सरकारी विद्यालयों में आयोजित होने वाली व्यावसायिक क्रियाओं का बालकों के सम्प्रेषण कौशल पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि व्यावसायिक गतिविधियों का बालकों के सम्प्रेषण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(iv) बरूह, टी.एन. (1990) :–

बरूह टी.एन. ने आसाम के पोलिटेक्निक संस्थाओं की स्थिति तथा उनकी असफलता के कारणों का अध्ययन किया। इन्होंने पता लगाया कि इन संस्थाओं की सफलता को बाधित करने वाली समस्याएँ हैं – दोषपूर्ण चयन

नीति, परम्परागत पाठ्यक्रम, अच्छा प्रशासन का न होना, दोषपूर्वक परीक्षा प्रणाली सुविधाओं का सही इस्तेमाल का न होना तथा असंतुष्ट शिक्षक।

(v) शर्मा, सज्जन (2008) :–

ने व्यावसायिक शिक्षा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता व मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा उनकी आवश्यकता की पूर्ति में विशेष भूमिका है। विद्यालयों में व्यावसायिक क्रियाओं में छात्र व छात्राएँ समान रूप से रूचि रखते हैं।

(vi) मैकेनिक (1986) :–

मैकेनिक ने ''वोकेशनल एजूकेशन ऑफ स्टूडेन्ट्स'' म इस तथ्य का पता लगाया कि पब्लिक माध्यमिक विद्यालयों में पदार्पण किया जिन्हें उन्हें स्वयं ने सुझाया था इनमें से 39 प्रतिशत विद्यार्थी ही सफल रहे।

(vii) भटनागर, ओ.पी. (1995) :–

भटनागर, ओ.पी. ने 'जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एक अध्ययन' किया जो जे.एन.यू. की विषय विशेषज्ञों पर किया तथा शिक्षकों की उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता की विषय की सफलता हेतु मुख्य आवश्यकता माना है।

(viii) लाही, सी.एन. (1995) :–

लाही, सी.एन. ने 242 माता–पिता 520 विद्यार्थी, 282 शिक्षकों तथा 120 विद्यालय प्रधानों पर एक अध्ययन किया। उन्हाने केरल में केरल के माध्यमिक विद्यालय में कार्य अनुभव का समीक्षात्मक परीक्षण किया। उन्होंने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि पाठ्यक्रम की वर्तमान समय की आवश्यकतानुसार परिवर्तित नहीं किया है तथा हमारी अपेक्षाओं को पूर्ण करने में असमर्थ है।

(ix) कुलश्रेष्ठ, प्रदीप (1997) :–

ने उदयपुर के 10 जमा दो पद्धति के अन्तर्गत 10वीं कक्षा के विद्यार्थी की व्यावसायिक रूचियों तथा उनको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जिसमें अधिकतर विद्यार्थियों की रूचि तकनीकी तथा विज्ञान आधारित विषयों में थी।

(x) मोजी, एन.एम. (1994) :–

ने मुम्बई को व्यावसायिक अध्ययन हेतु मा. व उ.मा. विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया। इन्होंने 1800 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि व्यावसायिक विषयों के चयन हेतु

पर्याप्त परामर्श व निर्देशन सेवाओं का अभाव होने से विद्यार्थी सही निर्णय लेने में असमर्थ होते हैं।

(xi) पारीक, वीणा (2004–05) :–

पारीक वीणा ने ने बी.एड. छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की लिंग भेद व पारिवारिक माहौल के आधार पर व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि लिंग भेद का व्यावसायिक रूचि पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

9. न्यादर्शन विधि :–

इसमें प्रदत्तों के स्त्रोत प्राथमिक हैं तथा प्रदत्तों की प्रकृति परिणात्मक प्रकार की है।

10. जनसंख्या एवं न्यायदर्शन :–

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर शहर के चार उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के (200) विद्यार्थी (100 छात्र व 100 छात्रायें) को न्यादर्श के रूप में लिया जाएगा।

11. न्यादर्श का विवरण :–

जयपुर शहर के 2 राजकीय व 2 निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को लिया जाएगा। 50 छात्र व 50 छात्रायें राजकीय विद्यालय की

तथा 50 छात्र व 50 छात्रायें निजी विद्यालय को न्यादर्श के रूप में लिया जाएगा।

12. अध्ययन के उपकरण :–

अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाएगा।

13. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :–

शोधकर्त्री परिकल्पनाओं के परीक्षण तथा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करेंगी।

1. मध्यमान :– $M = \frac{\varepsilon f x}{n}$

2. प्रमाप विचलन :– $\frac{\sqrt[\sigma]{\varepsilon d}^2}{n}$

3. सह सम्बन्ध गुणांक :– $Y \quad 1- \frac{6\varepsilon d^2}{n(n^2-1)}$ (श्रेणी अन्तर विधि)

14. आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या :–

इसमें शोध के आरम्भ में जो परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई थी। उनका विश्लेषण व व्याख्या की जायेगी।

15. अध्ययन की रूपरेखा :–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध परम श्रद्धेय डॉ. मंजू चौधरी जी के निर्देशन में सम्पनन होगा –

– प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की विषय सूची को पांच अध्यायों में विभक्त किया जाएगा –

* प्रथम अध्याय प्रस्तावना (पृष्ठभूमि) का होगा जिसमें व्यावसायिक शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया जाएगा।
* द्वितीय अध्याय सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से सम्बन्धित होगा इस अध्याय में शोध के विषय से सम्बन्धित हुए अध्ययनों का उल्लेख किया जाएगा।
* तृतीय अध्याय योजना तथा प्रक्रिया से सम्बन्धित होगा। इस अध्याय मे अध्ययन का क्षेत्र, विधि आदि के सम्बन्ध में बताया जाएगा।
* चतुर्थ अध्याय समंक विश्लेषण व अर्थायन का होगा जिसमें अध्ययन द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा।
* पंचम अध्याय में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष व सुझाव दिए जाएँगें।

16. निष्कर्ष :–

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व वर्तमान में बेरोजगारी की समस्या के समाधान के रूप में अत्यधिक है। व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रखना होगा वरन् विस्तृत रूप देकर जीवन से सम्बन्धित करना होगा। समाज के सभी वर्ग विशेषकर शिक्षकों को व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का दायित्व अपनाना होगा। इस शोध का उद्देश्य यही है कि उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करके कुशल कार्यकर्ता का निर्माण हो। ऐसे कार्यकर्ता को स्वतन्त्र रूप से आत्मविश्वास पूर्वक अपना व्यवसाय या नौकरी कर सके। यही हमारी व्यावसायिक शिक्षा की वास्तविक सफलता होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

लेखक	पुस्तकें	प्रकाशक
1. अग्निहोत्री, रवीन्द्र	आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्याएँ व समाधान	राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकादमी,जयपुर 2006
2. मंगल, डॉ अंशु	शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी	राधा प्रकाशन मंदिर आगरा–2006–07
3. पाठक, पी.डी.	भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ	विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2004–05
4. शर्मा, डॉ.एन.आर.	शिक्षा सिद्धान्त एवं प्रकाशन	साहित्य चन्द्रिका
5. उपाध्याय, वर्षा	शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन	विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–1967
6. कृष्णा कान्त	भारतीय शिक्षा का इतिहास व विकास	आर.लाल बुक डिपो मेरठ
7. पाठक, पी.डी. व त्यागी	भारतीय शिक्षा के आयोग	विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2

8. सिंह, डॉँ गया	भारत में शैक्षिक पद्धति का विकास	आर.लाल बुक डिपो
9. सिंह, डॉँ. एच.पी.	समकालीन भारत ैर शिक्षा	राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा.लि.
10. सिंह, डॉँ. गया	शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ	आर.लाल बुक डिपो
11. शुक्ला, डा. ग्रिरूमर त्रिपाठी, सुश्री अल्का	आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा	जयपुर प्रकाशन – 2007

– – – – –